



112113 - উপর্যুপরি কবরী গুনাত লিপ্ত ব্যক্তরী মারা গলে তাदरे शषे परणित्ति

प्रश्न

आल्लाह ताआलार बाणी: “व्यभचारिणी ओ व्यभचारी— तादरे प्रतयकेके एकशत वतेराघात करवते”, एवं आल्लाह ताआलार बाणी: “आर यारा सचचरतिरा नारीर प्रतिअपवाद आरओप करते, तारपर तारा चरजन साक्षी नयिते ना आसते, तादरेके तेमरा आशति वतेराघात कर।” एवं आल्लाह ताआलार बाणी: “आर पुरुष चओर ओ नारी चओर— तादरे उभयरे हात कटेते दाओ; तादरे कृतकरमरे फल ओ आल्लाहर पक्ष थकेते दृष्टान्तमूलक शास्ति हिसिबेते। आर आल्लाह पराकरमशाली, प्रज्जएगमय।” एरा यारा ए धरणरे कबरी गुनाते लपित हय एवं तादरे उपर शरयि शास्तिकायमे करार मत कटेते ना थकते एवं तारा ताओवा ना करते मारा यय; ताहले कयिमतरे दनि तादरे हुकुम कि हवते?

प्रयि उत्तर

आलहामदु लल्लाह।

“आहले सुन्नाह ओयल जामाआतरे आकदि हलो: मुसलमानदरे मध्ये कटेते यद व्यभचारि, अपवाद-आरओप, चुरि हित्यादरि मत कबरी गुनाते उपर्युपरी लपित अवस्थाय मारा यय ताहले से व्यक्ति आल्लाहर इच्छार अधीन थकवते। तनि चहिले तাকে क्षमा करे दबिने। आर तनि चहिले तাকে उपर्युपरी लपित कबरी गुनाहटरि जन्य शास्ति दबिने। तबे तार शषे परणित्ति हवते जान्नात। यहतेते आल्लाह ताआला बलने: “नश्चय आल्लाह शरि करे गुनाह क्षमा करवने ना; एर चयेते लघु गुनाह तनि यार जन्य इच्छा क्षमा करवने।” [सूरा नसि, आयात: 8८]

एवं एह मरमे सहहि ओ मुताओयातरि हादसिगुलोेर कारणते; ये हादसिगुलोे प्रमाण करे ये, गुनाहगार ईमानदारदरेके जाहान्नाम थकेते वरे करा हवते। उवाद वनि सामते (राः) एर हादसि एसछेते: “आमरा नबी साल्लाल्लाहु आलाइहि ओया साल्लामरे काछे छलाम। तखन तनि बललने: तेमरा कि आमर हाते एह मरमे बाइआत (अङ्गीकार) करवते ना ये, तेमरा आल्लाहर साथे शरि करवते ना, व्यभचारि करवते ना, चुरि करवते ना...?! तेमोदरे मध्ये ये व्यक्ति अङ्गीकार पूर्ण करवते से आल्लाहर काछे एर प्रतदिन पावते। आर ये व्यक्ति एर कनेटति लपित हवते एवं तাকে एर दण्ड देओया हवते ताहले एह दण्ड तार जन्य प्रतिकार हयते यावते। आर ये व्यक्ति एर कनेटति लपित हयछेते; कन्ति आल्लाह तार वयिगटि गोपन रथेछेने; तार सिद्धान्त आल्लाहर काछे। तनि चहिले तাকে शास्ति दति पारने एवं चहिले तাকে क्षमा करे दति पारने।”

आल्लाहइ उत्तम ताओफकिदाता, आमदरे नबी मुहाम्मदरे प्रति, तार परवार-परजिन ओ साहाबीवरगरे प्रति आल्लाहर रहमत



ও শান্তি বর্ষতি হোক।[সমাপ্ত]

গবেষণা ও ফতোয়া বিষয়ক স্থায়ী কমিটি।

শাইখ আব্দুল আযযি বনি বায, শাইখ আব্দুর রাজ্জাক আফফি, শাইখ আব্দুল্লাহ্ বনি গাদইয়ান, শাইখ আব্দুল্লাহ্ বনি কুয়ুদ।[ফাতাওয়াল লাজনাৎ দায়মি (১/৭২৮)]